

दुर्गासप्तश्लोकी

दुर्गाहोमे विशेषः
दुर्गाजी की आरती
कुञ्जिकास्तोत्रम्
श्रीदेवीक्षमापनस्तोत्रञ्च ।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई,

संस्करण : अक्टुबर २००६, सम्वत् २०६३

मूल्य : ५ रूपये मात्र

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

अथ

दुर्गासप्तश्लोकी

दुर्गाहोमे विशेषः, दुर्गाजी की आरती,

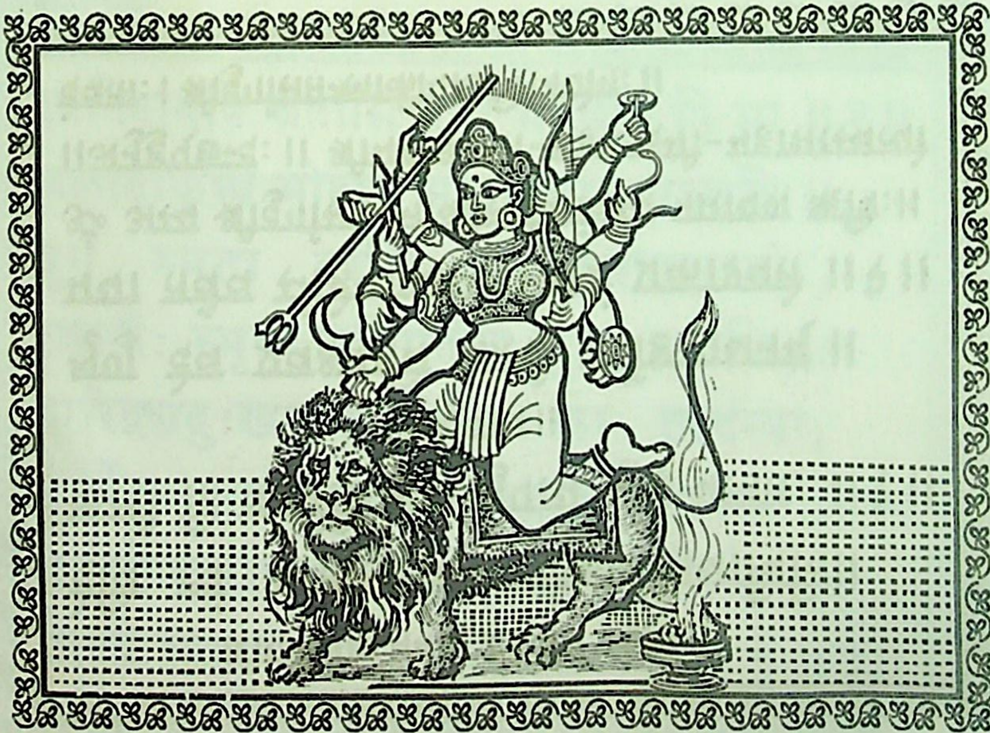
कुञ्जिकास्तोत्रम्, श्रीदेवीक्षमापनस्तोत्रञ्च।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई,

भूमिका

प्रिय पाठकगण ! आज बड़े सौभाग्य का दिन है कि, दुर्गासप्तश्लोकी नामक पुस्तक आप लोगों की सेवा में उपस्थित है । अहा ! हा !! हा !!! इतनी बड़ी पुस्तक का सारांश कि, जिसके पढ़ने से सम्पूर्ण दुर्गापाठ का फल प्राप्त होता है । वही पुस्तक श्रीदुर्गाजी की कृपा से छप कर प्रकाशित है । आशा है कि, पाठकगण इसे पाठ कर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे ।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी- पं. देवीप्रसाद द्विवेदी, मांडा - प्रयाग ।



श्रीगणेशाय नमः। श्रीशिव उवाच॥

देवि त्वं भक्तिसुलभे सर्वकार्यविधायिनि॥
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥१॥

॥ देव्युवाच॥

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ॥
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तोत्रं प्रकाश्यते ॥२॥

ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमंत्रस्य नारायण ऋषिः॥ ॥अनुष्टुप्छन्दः॥ श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः। श्रीदुर्गासप्तश्लोकीपाठे विनियोगः॥

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥१॥
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥३॥

शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे ।।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।४।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते ।।५।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् ।।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति ।।६।।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरि ॥
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥७॥
य एतत्परमं गुह्यं सर्वरक्षाविशारदम् ॥
देव्याःसंभाषितं स्तोत्रं सदा साम्राज्यदायकम् ॥८॥
शृणुयाद्वा पठेद्वापि पाठयेद्वापि यत्नतः ॥
परिवारयुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥९॥

इति दुर्गासप्तश्लोकी समाप्ता॥ शुभमस्तु॥

॥ अथ दुर्गाहोमे विशेषः ॥

चंडीस्तवे प्रतिश्लोकमेकैकाऽऽहुतिरिष्यते ॥
रक्षाकवचगैर्मन्त्रैर्होमं तत्र न कारयेत् ॥१॥
मौर्ख्यात्कवचगैर्मंत्रैः प्रतिश्लोकं जुहोति यः।
स्याद्देहपतनं तस्य नरकं च प्रपद्यते ॥२॥
कवचाहुतिदोषेण रावणः प्रलयं गतः।
अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोमपरायणः॥
कवचाहुतिजातपापान्महेशेन निपातितः ॥३॥

॥ अथ श्रीदुर्गाजी की आरती ॥

जै अंबे गौरी मैया जै मंगलमूर्ती, मैया जै आनँदकरणी ॥
तुमको निशिदिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिव री ॥टेर॥
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको ॥
उज्ज्वलसे दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ जै अंबे० ॥ १ ॥
कनक समान कलेवर रक्तांबर राजै ॥
रक्त-पुष्प गल माला, कंठनपर साजै ॥ जै अंबे० ॥ २ ॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्र धारी ॥
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ जै अंबे० ॥ ३ ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥
कोटिक चन्द्रदिवाकर सम राजत ज्योती ॥ जै अंबे० ॥ ४ ॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुरघाती ॥
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ जै अंबे० ॥ ५ ॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ॥
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥ जै अंबे० ॥ ६ ॥
भुजा चार अति शोभित खड्गखप्रधारी ॥
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ जै अंबे० ॥ ७ ॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुरबाती ॥
श्रीमालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ जै अंबे० ॥ ८ ॥
याअम्बेकी आरति, जो कोई नर गावै ॥
भणत शिवानँद स्वामी सुख संपति पावै ॥ जै अंबे० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीदुर्गाजी की आरती समाप्त ॥

।। अथ कुञ्जिकास्तोत्रम् ।।

ॐ अस्य श्रीकुञ्जिकास्तोत्रमंत्रस्य सदाशिव ऋषिः।। अनुष्टुप्छंदः।। श्रीत्रिगुणात्मिका देवता।। ॐ ऐं बीजम्।। ॐ ह्रीं शक्तिः।। ॐ क्लीं कीलकम्।। मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।। शिव उवाच।।

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।।
येन मंत्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्।। १ ।।
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।।
न सूक्तं नापि वा ध्यानं न न्यासो न वार्चनम्।। २ ।।
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।।
अतिगुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्।। ३ ।।

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।। ४ ।।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ।।

ॐ श्रूँ श्रूँ श्रूँ शं फट् ऐं ह्रीं क्लीं ज्वल उज्वल प्रज्वल ह्रीं ह्रीं क्लीं स्रावय स्रावय शापं नाशय नाशय श्रीं श्रीं श्रीं जूं सः स्रावय आदय स्वाहा।। ॐ श्लीं हूँ क्लीं ग्लां जूं सः ज्वलोज्वल मन्त्रं प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

नमस्ते रुद्ररूपायै नमस्ते मधुमर्दिनि ।।
नमस्ते कैटभनाशिन्यै नमस्ते महिषार्दिनि ।।
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरसूदिनि ।।

नमस्ते जाग्रते देवि जपे सिद्धिं कुरुष्व मे॥
ऐंकारी सृष्टिरूपिण्यै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥
क्लीं काली कालरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते॥
चामुण्डा चण्डरूपा च यैङ्कारी वरदायिनी॥
विच्चे त्वभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वागीश्वरी तथा॥
क्रां क्रीं क्रूं कुब्जिकादेवि शां शीं शुं मे शुभं कुरु॥
हूं हूं हूंकाररूपायै जां जीं जूं भालनादिनी॥
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥
ॐ अं कं चं टं तं पं सां विदुरां विदुरां विमर्दय विमर्दय
ह्रीं क्षां क्षीं स्त्रीं जीवय जीवय त्रोटय त्रोटय जंभय जंभय

दीपय दीपय मोचय मोचय हूं फट् जां वौषट् ऐं ह्रीं क्लीं
रंजय रंजय संजय संजय गुंजय गुंजय बंधय बंधय भ्रां भ्रीं भ्रूं
भैरवी भद्रे संकुच संचल त्रोटय त्रोटय म्लीं स्वाहा ॥

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥
म्लीं म्लां म्लूं मूलविस्तीर्णा कुब्जिकास्तोत्रहेतवे ॥
अभक्ताय न दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥
विहिना कुब्जिकादेव्या यस्तु सप्तशतीं पठेत् ॥
न तस्य जायते सिद्धिर्ह्यरणे रुदितं यथा ॥

॥ श्रीडामरतन्त्रे ईश्वरपार्वतीसंवादे कुब्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ देवीक्षमापनस्तोत्रम् ॥

अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥ १॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥ २॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥ ३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदंबेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥ ४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदंबिके।
इदानीमनुकंप्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥ ५॥

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥ ६॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानंदविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥ ७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥ ८॥

॥ इति देवीक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थ

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS